International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 534-536

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 534-536
www.allresearchjournal.com
Received: 15-08-2015
Accepted: 18-09-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप

आधे–अधूरे नाटक में युगबोध

डॉ. शिवदत्त शर्मा

प्रत्येक युग में जब कोई विशेष दृष्टिकोण व्यक्त किया जाता है अथवा समयानुसार कोई बात आधुनिक संदर्भ में कही जाती है तो वह युग बोध का वाचक बन जाती है।अतः साहित्य में आधुनिकता का सम्बन्ध यथार्थ वर्णन अथवा जीवन्त दृष्टिकोण से जोडा जा सकता है।दूसरे शब्दों में इसे युग बोध कह सकते हैं। आधे–अधूरे नाटक में आद्योपान्त युगबोध को ही आधार बना कर नाटक की रचना की है।

मोहन राकेश एक प्रखर एवं प्रबुद्ध नाटककार होने के नाते उन सभी समस्याओं से भलीभान्ति परिचित थे जिनसे आजकल, विशेषकर मध्यम वर्ग दोचार हो रहा है।[1] यही कारण है कि यह नाटक स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त सर्वाधिक चर्चित नाटक रहा है।मोहन राकेश इस से पूर्व आषाढका एक दिन, लहरों के राजहंस नामक दो नाटकों की रचना कर चुके थे। इन दोनों नाटकों में नाटककार ने प्रतीकात्मकता के माध्यम से सम्यक यथार्थ का साक्षात्कार किया था, लेकिन इन दोनों नाटकों में यथार्थ पूर्णतः आरोपित था ।इस आधे–अधूरे नाटक में जिस आधुनिक युगबोध का बर्णन किया गया है,वह महानगरीय जीवन के यथार्थ का उद्घाटन करता है।

आधे–अधूरे के युगबोध के बारे में डॉ दिनेशचन्द्र वर्मा ने कहा है–जबकि आधेअधूरे ,टूटे हुए सम्बन्धों की पीडा में टूटते परिवार के सदस्यों और विसंगत परिस्थितियों में जीते हुए उनकी विवश छटपटाहट को अधिक स्पष्टता और मार्मिकता से अभिव्यक्त करता है। यह नाटकमूल रूप से स्त्रीपुरुष सम्बन्धों पर और सम्बन्ध के पारस्परिक तनाव पर एक दृष्टि है पर आनुषंगिकरूप से यह नाटक एक साथ कई अर्थ उजागर करता है।महेन्द्रनाथ और सावित्री एक दूसरे से उकताकर एकदूसरे को छोड देने का निर्णय न जाने कितनी बार ले चुके है और कई बार उनके लिए उपयुक्त समय भी आता हैं,जब वे सम्बन्ध विच्छेद कर लें फिर भी न जाने वह कौन सी अनजानी कोशिश है जो उन्हें एक बार फिर से आमने सामने ला खडा करती है और विवश भाव से वे फिर से एक नई शुरुआत स्वीकार कर लेते हैं।[2]

आधुनिक संसार में परिवर्तन की गति बडी तेज है। विशेषकर नगरीय रहन सहन में बहुत परिवर्तन आ चुका है तथा निकट भविष्य में इसकी गति और तेज हो जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।[3] सुविधाओं के अभाव में ग्रामीण रहन सहन से तंग होकर युवा वर्ग नगरों को पलायन कर रहा हैं नैतिक मूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। इसी आधुनिकता की दौड में औरत भी पीछे नहीं है और वह भी अब घर की चारदीवारी से निकल कर काम काजी अथवा नौकरी पेशा नारी कहलाने लगी है। इस आधुनिकता की अन्धी दौड में समाज को चाहे कुछ अधिक मिला हो परन्तु जीवन मूल्यों को बहुत दूर पीछे छोड आया है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि युगों से दबी हुई विकृत काम–कुण्ठा नारी सब मर्यादाओं को तोड कर बाहिर आने लगी है। विशेषकर निम्न मध्य वित्तीयवर्ग के परिवारों में व्याप्त इस भौतिकवादी प्रवृत्ति ने पति–पत्नी, मां बेटी आदि के सम्बन्धों को खोखला कर दिया।

आधेअधूरे नाटक के बारे में ई अल्का का कथन सही है– यह नाटक मध्य वर्गीय जीवन की शुष्क विनाश कारी रिक्तता का प्रखर दस्तावेज है और विकृत मूल्यों, भ्रान्तियों एवं दोगली नैतिकता का निर्मम निरावरण है, जो उसकी रिक्तता के कारण है। इस नाटक में पारिवारिक विघटन,आर्थिक अर्थाभाव, खोखले पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों ,प्रेमविवाह,आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। ये सभी प्रश्न आधुनिकता बोध से जुडे हुए हैं।

1 पारिवारिक बिखराव की समस्या– निम्न मध्यवर्गीय परिवार की सामाजिक,आर्थिक तथा मानसिक दशा का यथार्थ चित्रण इस नाटक में देखने को मिलता है।एक ही छत के नीचे रहते हुए भी उनमें परस्पर स्नेह की भावना के दर्शन नहीं होते।आर्थिक अभाव के कारण परस्पर मतभेद उभरने लगते हैं।पिता जब उनकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता तो उसे भी अपमान एवं अनादर का का सामना करना पडता है।घर का मुखिया महेंन्द्र नाथ इसका प्रतीक है।

वह बेकार निकम्मा ,और घर में ही रह कर जीवन को धक्के दे रहा हैं। घर चलाने के लिए उसकी पत्नी घर से बाहिर नौकरी करती है तथा अनेक पुरुषेां के सम्पर्क में आती है। पत्नी, बेटा बेटियां सब अपनें पिता का अनादर करते हैं क्योंकि वह कुछ भी कमाता नहीं है। पारिवारिक उपेक्षा के कारण वह कई बार घर छोडने का विचार बनाता हैलेकिन साहस नहीं कर पाता ।इस तरह यह नाटक मध्यवर्गीय जीवन में आने वाली शुष्क और विनाशकारी रिक्तता को उघाडने वाला यह नाटक मनुष्य के खोखले पन, सम्बन्धों के सतहीपन तथा जीवनादर्शों व आस्थाओं से लडखडाते मानदण्डों को सजीव रूप से प्रस्तुत करता है।

2 भौतिक वादी विचार धारा–

निम्न मध्यवर्गीय परिवार भारतीय समाज में सदैव आर्थिक अभाव से जूझता दिखाई देता हैचाहे यह अभाव अधिक इच्छाओं के कारण पैदा किया गया हो।इस तरह भौतिकवाद के कारण अपने चारों ओर अर्थाभाव की एक दिवार बना ली है जिसमें घुटघुट कर अपना जीवन बिताने को सारा परिवार मजबूर है।इस नाटक मेंअर्थाभाव को अशांति का मुख्य कारण इंगित किया है। सावित्री आर्थिक स्थिति को सुधारने केलिए न केवल नौकरी करती है अपितु बडे बडे लोगों से सम्पर्क भी साधती उसके लडके को नौकरी मिल जाए ,इस प्रयास में वह विषय गामिनी भी हो जाती है। ध्यान योग्य तथ्य यह है कि परिवार कोई भूख से मर नहीं रहा फिर भी वह भौतिक वादी प्रवृत्ति के कारण कुमार्ग पर चलदेती है। सिंघानिया जैसे व्यक्ति को अपने पुत्र की नौकरी के लिए घर बुलाती है जो नितान्त भ्रष्ट व्यक्ति है। दूसरे शब्दों में वह व्यक्ति को नहीं अपितु उसकी अमीरी नाम तथा रुतबे को आमन्त्रित करती है।

3 खोखले नीरस एवं सामाजिक सम्बन्धों का उद्घाटन–

नाटक में इस तथ्य का उद्घाटन बडे अच्छे ढंग से किया है कि भौतिक वादी दृष्टिकोण होने के कारण वर्तमान काल में पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्ध अत्यन्त खोखले हो चुके हैं।स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति, उन्मुक्तता और आर्थिक बदहाली ने इस वर्ग के लोगों का जीवन खोखला एवं बनावटी बना दिया हैं। परस्पर सद्भाव प्रेम एवं आत्मीयता जैसे सदा सदा के लिए कहीं खो गई है। महेन्द्र और सावित्री के माध्यम से इस स्थिति को दिखाया गया है। सावित्री की बडी लडकी यही बात कहती है– मैं यहां थी तो मुझे कई बार लगता था कि मैं घर में नहीं चिडियाघर के पिंजरे में रहती हूं जहां आप सोच भी नहीं सकते कि क्याक्या होता रहा है यहां। मनोज जो पहले सावित्री का प्रेमी होता है वही उस की लडकी को भगा ले जाता हैं तथा बाद में शादी कर लेता हैं। सावित्री भी जगमोहन,जुनेजा ,आदि के साथ भी अपने यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं। निस्वार्थ भाव से कोई सहायता करने के लिए आगइस तरह इन खोखले सम्बन्धों के कारण महानगरा के निम्न वित्तीय वर्ग के परिवार बुरी तरह टूट रहे है।

4 स्वच्छन्द काम इच्छा–

आज के भौतिक वादी युग की सबसे बडी विडम्बना यह है कि शिक्षित युवा–युवतियां सामांजिक संयमों और नियमेां की धज्जियां उडा रहे हैं।[4] अनेक बार तो वे अपने माता पिता को भी आंखे दिखाते हैं। धीरे धीरे युवक युवतियां स्वच्छन्द काम की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यह नाटक भी इसी विभत्स पक्ष का दिग्दर्शन कराता है। सावित्री अधूरे पुरुषका जगह पूरे पुरुष की चाह में परपुरुष की बाहों में जाने में जरा भी परहेज नही करती।एक ओर वह एक ओर परपुरुष के द्वारा सैक्स की पूर्ति करती है तथा दूसरी ओर उससे अतिरिक्त अनुग्रह भी पाना चाहती है।यही कारण है कि वह एक से बंध कर रहना नही चाहती। इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि उसके सभी बच्चे बिन्नी, अशोक आदि सभी चरित्रहीनता की ओर अग्रसर होते दिखाई देते हैं।

5 प्रेम–विवाह–

इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने इस ओर संकेत किया हे कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज के युवकऔर युवतियां स्वच्दन्द प्रेम में विश्वास करने लगे हैं। युवक–युवतियां विवाह से पूर्व ही सैक्स की भूख में अपने अस्थाई मित्र ढूंढ रहे है। इस भौतिकवादी सोच के कारण सच्चा प्रेम ढूंढने पर भी नहीं मिलता। नित्यही प्रेम विवाह हो रहे हैं और बुरी तरह असफल हो रहे हैं। बडे शहरों में स्त्रियां अथवा पुरुष किसी एक विवाह में बंधे नहीं रहना चाहते। भौतिकवाद ने उन्हें इस तरह जकड दिया है कि अब उन के लिए नैतिक मूल्यों के लिए कोई स्थान नहीं हैं। स्त्रियां और पुरुष घरों में आधुनिकतम सुविधाएं चाहती हैंजिसके लिए अधिक धन की आवश्यकता है। कुल मिला कर भौतिकवादिता के कारण अपना सर्वस्व खो कर भी उन्हें ग्लानि नहीं होती। परिवार के सभी सदस्य कहां तक गिर गए हैं यह प्रत्येक सदस्य के कारनामों से जाहिर हो जाता है।

6 कृत्रिम जीवन शैली–

आधुनिक युग में हमारा जीवन बनावटी और दिखावटी बनकर रह गया हैं विशेष कर मध्य वर्ग के परिवार बडा ही आडम्बर पूर्ण जीवन जीते हैं। घर में भले ही धन का संकट हा परन्तु वे किसी अच्छे होटल में भोजन करने का दिखावा करते हैं। अपनी चादर देख कर पांव पसारने की आदत नहीं दिखाई देती सब केवल झूठी शान की खातिर। अनाप–शनाप खरचा करके उधार के पैसे से धनवान होवे का दिखावा करता है। पकान कार और घरेलू सामान की किस्तें देने की ताकत उनमें नहीं है।[5] प्रस्तुत नाटक आधे अधूरे में नाटककार ने आधुनिक युग के मध्यवर्गीय परिवार की स्थिति पर प्रकाश डाला है।

महेन्द्रनाथ के पास जब पर्याप्त धन था तब अपने खर्चों पर नियन्त्रण नहीं कर सके और अब जब उनके पास सब कुछ उधार का है तो वे जीवन में शाति एवं स्थैर्य कैसे पा सकते है।

यदि सावित्री सफल गृहिणी होती तो निश्चय ही भावी संकट के लिए कुछ न कुछ बचा कर रख सकती थी जो मुसीबत में उसके काम आता।

संक्षेप से कह सकते हैं कि आधे अधूरे नाटक आधुनिक युग बोध का नाटक है।[6] इसमें नाटककार ने पारम्परिक जीवन मूल्यों तथा पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों के विघटन का उद्घाटन किया है। नाटक का प्रतिपाद्यआधुनिक समस्याओं और जीवन मूल्यों का उद्धाटन करना है। इस टूटते– बिखरते परिवेश में आाधुनिकता का बोध इतना मानवीयता की नियति के स्तर पर नहीं है जितना उसकी स्थिति के आधारपर है और इतना जितना इसलिए कि एक स्तर दूसरे स्तर से अलग नहीं जा सकता।

आधे अधूरे नाटक में घर के सभी सदस्य मात्र रबड स्टैम्प बन कर रह गए हैंऔर महेन्द्र तो खुद कहता है किवह एक रबड का टुकडा भर है। इस नाटक का प्रत्येक पात्रतन और मन दोनों से ही विभक्त है विखरा हुआ है।

यह नाटक आधुनिक बोध से जुडा होने के कारण हमारे समाज शास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों के लिए बहुत बडी समस्या एवं चुनौति बन कर खडा हैं। इसमें मघ्य वित्ती स्तर से निम्न वर्ग तक शहरी परिवार का कडवाहट भरा चित्रण नाटककार ने बडी सुन्दरता से उतार दिया है। विडम्बना यह है कि व्यक्ति स्वयं अधूरा होते हुए ीाी दूसरों के अधूरे पन कोसहना नहीं चाहता और काल्पनिक पूरेपन की तालाश में भटक कर अपनी और दूसरों की जिन्दगी नरक बना देता है। यह स्थिति नाटक के पात्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि सामान्य समाज के ऐसे सभी परिवारों की है जो इस वर्ग विशेष से सम्बन्ध रखते हैं।

जहां तक प्रेम सम्बन्धेां का प्रसंग है महेन्द्र और सावित्री मनोज और बिन्नी तथा अशोक और वरुणा के माध्यम से नसटककार ने विभिन्न प्रेम–प्रसंगों की चर्चा की है। महेन्द्र–सावित्री मनोज और बिन्नी दोनों ही प्रेम विवाह करते हैं नतो महेन्द्र सावित्री से सन्तुष्ट

है और नही सावित्री महेन्द्र से। लगभग यही स्थिति मनोज और बिन्नी की है। जुनेजा का तो यह भी कहना है कि पहेन्द्र अपनी पत्नी सावित्री से अत्यधिक प्यार करता है और वह नहीं चाहता कि उसकी पत्नी सावित्री परपुरुषों के साथ सम्पर्क करे।[7]

स्पष्ट है कि नाटककार प्रेम–विवाह की समस्या को आधुनिक समस्या मानता है। अतः वह इसके दुष्परिणामों की ओर भी दर्शकों अथवा पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है। कुल मिला कर यह कह सकते हैं कि नाटक कार इस नाअक के माध्यम से आधुनिक मध्यवर्गीय समाज की सामाजिक आर्थिक तथा पारिवारिक समस्याओं के कारणों की ओर सफलता पूर्वक संकेत दे कर उसके निदान का प्रश्न पाठकों अथवा दर्शकों के समक्ष छोड जाता है।

सन्दर्भ सूचि–

1 सुभाष चन्द्र आधे–अधूरे समालोचना पृ65
2 डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहासपृ
3 आचार्य चतुरसेन शास्त्री इतिहास ग्रन्थ पृ 45
4 डॉ वच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ112
5 डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ78
6 डॉ राम कुमार हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ67
7 मोहन राकेश आधे–अधूरे पृ36